शैशवावस्था की मुख्य विशेषताएँ

(**CHIEF CHARACTERISTICS OF INFANCY**)

शैशवावस्था, मानव विकास की दूसरी अवस्था है। पहली अवस्था गर्भकाल है जिसमें शरीर पूर्णतः बनता है और शैशवावस्था में उसका विकास होता है। शैशवावस्था की विशेषतायें इस प्रकार है -

1. **शारीरिक विकास में तीव्रता** (Rapidity in Physical Development)--शैशवावस्था के प्रथम तीन वर्षों में शिशु का शारीरिक विकास अति तीव्र गति से होता है। उसके भार और लम्बाई में वृद्धि होती है। तीन वर्ष के बाद विकास की गति धीमी हो जाती है। उसकी इन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों, आन्तरिक अंगों, मांसपेशियों आदि का क्रमिक विकास होता है।

2. **मानसिक क्रियाओं की तीव्रता** (Rapidity in Mental Activities)-शिशु की मानसिक क्रियाओं; जैसे-ध्यान स्मृति, कल्पना, संवेदना और प्रत्यक्षीकरण (Sensation and Percepion) आदि के विकास में पर्याप्त तीवता होती है। तीन वर्ष की आयु तक शिशु की लगभग सब मानसिक शक्तियों कार्य करने लगती हैं।

3. **सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता** (Rapidity in Learning Process)-शिशु के सीखने की प्रक्रिया में बहुत तीव्रता होती है और वह अनेक आवश्यक बातों को सीख लेता है। गेसल (Gescll) का कथन है-**बालक प्रथम 6 वर्षों में बाद के 12 वर्षों सेदुगुना सीख लेता है।**

4. **कल्पना की सजीवता** (Live Imagination)-कुप्पूस्वामी (Kuppuswamy) (p.75) के शब्दों में-"धार वर्ष के बालक के **सम्बन्ध में एक अति महत्त्वपूर्ण बात है-उसकी कल्पना की सजीवता। वह सत्य और असत्य में अन्तर नहीं कर पाता है। फलस्वरूप, वह असत्यभाषी जान पड़ता है।**

5. **दूसरों पर निर्भरता** (Dependence on Others)जन्म के बाद शिशु कुछ समय तक बहुत असहाय स्थिति में रहता है। उसे भोजन और अन्य शारीरिक आवश्यकताओं के अलावा प्रेम और सहानुभूति पाने के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। वह मुख्यतः अपने माता-पिता और विशेष रूप से अपनी माता पर निर्भर रहता है।

6. **आत्म-प्रेम की भावना** (Self Love)-शिशु में आत्म-प्रेम की भावना बहुत प्रबल होती है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहन आदि का प्रेम प्राप्त करना चाहता है। पर साथ ही. वह यह भी चाहता है कि प्रेम उसके अलावा और किसी को मिले । यदि और किसी के प्रति प्रेम व्यक्त किया जाता हैं तो उसे उससे ईरष्य आ जाती है।

7. **नैतिकता का अभाव** (Lack of Morality)- पशु में अच्छी और बुरी, उचित और अनुचित बातो का ज्ञान नही होता है। वह उन्ही कार्यो को करना चाहता है, जिसमें उसको आनन्द आता है, भले ही वे अवांछनीय हो। इस प्रकार. उसमें नैतिकता का पूर्ण अभाव होता है। .

8. **मूलप्रवर्तियो पर आधारित व्यवहार** (Instinct based Behaviour) -शिशु के अधिकाश व्यवहार का आधार उसकी मूलप्रवृतियाँ होती है। यदि उसको किसी बात पर क्रोध आ जाता है, तो उसको अपनी वाणी या क्रिया द्वारा व्यक्त करता है। यदि उसे भूख लगती है, तो उसे जो भी वस्तु मिलती है, उसी को अपने मुंह में रख लेता है।

.9. **सामाजिक भावना का विकास (**Development of Social Feelings)-इस अवस्था के अन्तिम वर्षों में शिशु में सामाजिक भावना का विकास हो [जाता है। वैलेनटीन (Valentine) (p. 5229का मत है- चार या पाच वर्ष के बालक में अपने छोटे भाइयों, बहिनों या सायियों की रक्षा करने जी प्रवृति होती है। यह 2 से 5 वर्ष तक के बच्चों के साथ खेलना पसन्द करता है। यह अपनी वस्तुओं में दूसरों को साझीदार बनाता है। यह दूसरे बच्चों को अधिकारों की रक्षा करता है और में उनको सांत्वना देने का प्रयास करता है।

10. **दूसरे बालकों में रुचि या अरुषि** (Interest or disinterest in Others)-शिशु में दूसरे बालकों के प्रति रुचि या अरुचि उत्पन्न हो जाती है। इस सम्बन्ध में **स्किनर** (Sinner) (A-p. 83) ने लिखा है-"**बालक एक वर्ष का होने से पूर्व ही अपने साथियों में रुधि व्यक्त करने लगता है। आरम्भ में इस रुचि का स्वरूप अनिश्चित होता है, पर शीघ्र ही यह अधिक निश्चित रूप धारण कर लेती है और रुचि एवं अरुचि के रूप में प्रकट होने लगती है।"**

11. **संवेगों का प्रदर्शन**-शिशु मैं जन्म के समय उत्तेजना के अलावा और कोई सेवेग नहीं होता है। विजेज (Bridges) ने 1932 में अपने अध्ययनों के आधार पर घो षित किया कि दो वर्ष की आयु तक बालक में लगभग सभी संवेगों का विकास हो जाता है। बाल मनोवैज्ञानिकों ने शिशु में मुख्य रूप से चार संवेग माने है-भय, क्रोध, प्रेम और पीड़ा।

12. **काम-प्रवृत्ति**-बाल-मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि शिशु में काम-प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है, पर वयस्कों के समान वह उसको व्यक्त नहीं कर पाता है। अपनी माता का स्तनपान करना और यौनांगों पर हाथ रखना बालक की काम-प्रवृत्ति के सूचक हैं।

13, **दोहराने की प्रवृत्ति**-शिशु में दोहराने की प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है। उसमें शब्दों और गतियों को दोहराने की प्रवृत्ति विशेष रूप से पाई जाती है ऐसा करने में वह विशेष आनन्द का अनुभव करता है।

14. **जिज्ञासा की प्रवृत्ति** (Curiosity Tendency)-शिशु में जिज्ञासा (Curiosity) की प्रवृति का बाहुल्य होता है। वह अपने खिलौने का विभिन्न प्रकार से प्रयोग करता है। वह उसको फर्श पर फेकसकता है। वह उसके भागों को अलग-अलग कर सकता है। वह बहुधा अपने खिलौनों को विभिन्न विधियों से रखने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार की क्रियाओं द्वारा वह अपनी जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने की चेष्टा करता है। इसके अतिरिक्त, वह विभिन्न बातों और वस्तुओं के बारे में क्यों और कैसे' के प्रश्न पूछता है।

15. **अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति** (Learning by Imitation)-शिशु में अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति होती है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहिन आदि के कार्यों और व्यवहार का अनुकरण करता है। यदि वह ऐसा नहीं कर पाता है, तो रोकर या चिल्लाकर अपनी असमर्थताः प्रकट करता है। अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति उसे अपना विकास करने में सहायता देती है।

16. **अकेले व साथ खेलने की प्रवृत्ति** (Loneliness andGregariousness) -शिशु में पहले अकेले और फिर दूसरों के साथ खेलने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति में होने वाले परिवर्तन का वर्णन करते हुए को एवं क्रो (Crow and Crow) (Child Psychology. p. 120) ने लिखा है- "बहुत ही छोटा शिशु अकेला खेलता है। धीरे-धीरे वह दूसरे बालकों के समीप खेलने की अवस्था में से गुजरता है। अन्त में, वह अपनी आयु के बालकों के साथ खेलने में महान् आनन्द का अनुभव करता है।"